व्यक्तित्व

(PERSONALITY)

द्वारा

डॉ0 श्रवण कुमार

असिस्टेन्ट प्रोफेसर (बी0एड0)

नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),

प्रयागराज

व्यक्तित्व (**Personality**)

सामान्यतः व्यक्तित्व से अभिप्राय व्यक्ति के रूप, रंग, कद अर्थात शारीरिक संरचना, व्यवहार तथा मृदुभाषी होने से लगाया जाता है ये समस्त गुण व्यक्ति के व्यवहार में परिलक्षित होते हैं। अतः व्यक्तित्व शब्द किसी ऐसे गुण या विशेषता को सूचित करता है जिसे व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में व्यवहार करने तथा पारस्परिक सम्बन्धों की दृष्टि से विशेष महत्व देते हैं। राम का व्यक्तित्व अच्छा है, उसका व्यक्तित्व अत्यन्त आकर्षक है तथा किरन का तो कोई व्यक्तित्व ही नहीं है इत्यादि वाक्यों का उपयोग व्यक्तित्व के लिए प्रायः किए जाते हैं। परन्तु सामान्य अर्थों में व्यक्तित्व से तात्पर्य शारीरिक गठन, रंगरूप, वेशभूषा, बात करने का ढंग तथा कार्यों के रूप प्रदर्शित व्यवहार जैसे गुणों के संयोजन से लगाया जाता है।

व्यक्तित्व का अर्थ–

'व्यक्तित्व' अंग्रेजी के Personality शब्द का हिन्दी रूपान्तर है जिसका शाब्दिक अर्थ भी वाह्य गुणों व आचरण को इंगित करता है। अंग्रेजी के इस शब्द की उत्पत्ति यूनानी भाषा के पर्सोना (Persona) शब्द से हुई है। जिसका आर्थ है–नकाब या मुखौटा (Mask)

यूनानी लोग नकाब पहन कर मंच पर राजा, दास, नर्तकी आदि का अभिनय करते थे उस समय उनका व्यक्तित्व अपनायी गयी भूमिका के रूप में देखा जा सकता था। अमरीश पूरी नकारात्मक अभिनय करने के कारण लोगों के मन में नकारात्मक प्रतिमा की छाप छोड़ते हैं अर्थात् उसे सब बुरा व्यक्तित्व वाला इन्सान मानते हैं।

कालान्तर में समय के परिवर्तन के साथ–साथ पर्सोना शब्द के अर्थ में भी बदलाव आया। ईसा पूर्व पहली शताब्दी में रोम के प्रसिद्ध लेखक सिसरो ने (व्यक्तित्व) पर्सोना का चार अर्थ बताया– व्यवहार जो दिखता है, जो वास्तविक नही है। वह कार्य जो जीवन में कोई करता है जैसे कि दार्शनिक। व्यक्तित्व के गुणों का संकलन जो मानव को उसके कार्य के योग्य बनाता है। विशेषता, लेखन। 13वीं शताब्दी तक इसे माना जाता रहा परन्तु 14वीं शताब्दी में मानव की विशेषताओं को स्पष्ट करने हेतु पर्सोना को पर्सनालिटी में परिवर्तित कर दिया गया।

व्यक्तित्व की परिभाषा–

मनोवैज्ञानिक की दृष्टि से व्यक्तित्व एक अत्यन्त जटिल, भ्रामक तथा अस्पष्ट प्रकृति वाला प्रत्यय है। व्यक्तित्व में एक मनुष्य के न केवल शारीरिक मानसिक गुणों का वरन् उसमें सामाजिक गुणों का समावेश होता है। परन्तु इससे व्यक्तित्व का अर्थ पूर्ण नहीं होता है क्योंकि ऐसा तभी हो सकता है जब समाज के सभी सदस्यों के विचार, हाव–भाव, संवेगों के अनुभव व सामाजिक क्रियाएँ एक जैसी है। अतः स्पष्ट है कि व्यक्तित्व की सर्वमान्य एवं पूर्णतया यथार्थ एवं स्पष्ट परिभाषा देना न केवल कठिन बल्कि असम्भव कार्य है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि व्यक्तित्व–मानव के गुणों, लक्षणों, क्षमताओं, विशेषताओं की संगठित इकाई है। परन्तु आधुनिक मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व को एक संगठित इकाई न मानकर गतिशील संगठन और एकीकरण की प्रक्रिया मानते हैं। व्यक्तित्व की परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं–

गिलफोर्ड– ''व्यक्तित्व गुणों का समन्वित रूप है।;;

वुडवर्थ– ''व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार की एक समग्र विशेषता है।

डेसील– ''व्यक्तित्व व्यवहार प्रवृत्तियों का एक समग्र रूप है, जो व्यक्ति के समायोजन में अभिव्यक्त होता है।''

ड्रेवर– ''व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों के उस एकीकृत तथा गत्यात्मक संगठन के लिए किया जाता है जिसे व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन में आदान–प्रदान के साथ व्यक्त करता है।''

आलपोर्ट– आलपोर्ट ने सन् 1937 में व्यक्तित्व की लगभग 50 परिभाषाओं का विश्लेषण व वर्गीकरण करके निष्कर्ष निकाला कि–

''व्यक्तित्व व्यक्ति के अन्दर उन मनोशारीरिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण के साथ उसका अनूठा समायोजन स्थापित करते है।''

आलपोर्ट के द्वारा प्रतिपादित व्यक्तित्व की परिभाषा मनोविज्ञान में सर्वाधिक मान्यता प्राप्त है क्योंकि यह व्यक्तित्व के सम्बन्ध में तीन बातों की ओर संकेत करती है–

- व्यक्तित्व की प्रकृति संगठनात्मक तथा गत्यात्मक है।
- व्यक्ति में मनो तथा शारीरिक दोनों गुण समाहित है।
- व्यक्तित्व वातावरण के साथ समायोजन से अभिलक्षित हाता है।

व्यक्तित्व की विशेषताएँ

1. आत्मचेतना।
2. सामाजिकता।

3. समायोजनशीलता।
4. निर्देशित लक्ष्य प्राप्ति।
5. इच्छा शक्ति।
6. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य।
7. विकास की निरन्तरता।

व्यक्तित्व के प्रकार–

व्यक्तित्व का वर्गीकरण तीन प्रकार से किया गया है–

1. शरीर रचना प्रकार
2. समाजशास्त्री प्रकार
3. मनोवैज्ञानिक प्रकार

शरीर–रचना दृष्टिकोण से व्यक्तित्व–

क्रेचमर ने शरीर रचना के आधार पर व्यक्तित्व को तीन प्रकार का बताया है–

(1) लम्बकाय (Asthenic)

इस प्रकार का व्यक्ति लम्बा तथा दुबला–पतला शरीर वाला होता है। सीना छोटा, भुजाएँ पतली होती है। वह दूसरों की आलोचना करना पसन्द करता है तथा किसी से घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं बनाता है।

(2) सुडौलकाय (Athietic)

ऐसे व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वस्थ होते हैं। सीना चौड़ा, माँसपेशियाँ पुष्ट व चेहरा देखने में अच्छा होता है। यह दूसरों से सामंजस्य बनाए रखते हैं।

(3) गोलकाय (नाटा) (**Picnic**)

इस प्रकार के व्यक्ति का शरीर मोटा, छोटा, गोल और चर्बी वाला होता है। ये सुख–दुख, क्रियाशील व निष्क्रिय, उत्साह व निरूत्साह आदि के मध्य फँसे रहते हैं अर्थात् कभी खुशी कभी गम (दुःखी) कभी क्रियाशील कभी निष्क्रिय, कभी उत्साही व कभी उत्साह विहीन रहते हैं। यह आराम तलब होता है।

मनोवैज्ञानिक व समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से व्यक्तित्व–

जुंग ने सामाजिक अन्तर्क्रिया के आधार पर व्यक्तियों को तीन भागों में बाँटा है–

1. अन्तर्मुर्खी (Introvert)
2. वहिर्मुखी (Extrovert)
3. उभयमुखी (Ambivert)

स्प्रेंगर ने समाजशास्त्रीय आधार पर व्यक्तित्व के निम्न प्रकार बताया है–

1. सैद्धान्तिक
2. आर्थिक
3. धार्मिक
4. राजनीतिक
5. सामाजिक
6. कलात्मक

भारतीय दृष्टिकोण से–

1. सात्विक व्यक्तित्व (सत्वगुण युक्त व्यक्ति)
2. राजसी (रजोगुण युक्त व्यक्ति, वीर, दबंग, कामना, आसक्ति, प्रवृति वाले व्यक्ति)
3. तामसी (तमोगुण युक्त व्यक्ति–प्रमादी, आलसी, क्रोधी, झगड़ालू प्रवृत्ति वाले व्यक्ति)

व्यक्तित्व के निर्धारक–

1. जैविकीय कारक
2. वातावरणीय कारक–

वातावरणीय कारकों के अन्तर्गत व्यक्ति के वातावरण से सम्बन्धित सभी कारक आ जाते हैं।

भौतिक वातावरण– जलवायु, भूमि, भौतिक संसाधन

सामाजिक वातावरण– परिवार, पड़ोस, जनसंचार, विद्यालय आदि

इनमें सामाजिक वातावरण का प्रभाव अधिक व्यापक होता है जिसके प्रभाव को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा व्यक्त किया जाता है–

(क) परिवार

(ख) पास–पड़ोस

(ग) आर्थिक स्थिति

(घ) विद्यालय

(ङ) जनसंचार

(च) धर्म एवं संस्कृति

उत्तम व्यक्ति की विशेषता–

1. शारीरिक गुण– शारीरिक रूप से स्वस्थ
2. मानसिक गुण– I.Q. चिन्तन, तर्क, बोध, अभिव्यक्ति शक्ति आदि।
3. सामाजिक गुण– मैत्री, परोपकार, समायोजन, नैतिकता आदि।
4. संवेगात्मक गुण– उच्च आकांक्षा, दयालु, संतोष, आशावादी, सांवेगिक स्थिरता आदि।
5. चारित्रिक गुण

व्यक्तित्व के सिद्धान्त–

व्यक्तित्व की प्रकृति को स्पष्ट करने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के सम्बन्ध में अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है–

1. मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त (Psycho-Analytical Theory)
2. शरीर रचना सिद्धान्त (constitutional Theory)
3. विषेशक (शीलगुण) सिद्धान्त (Trait Theory)
4. माँग सिद्धान्त (Need Theory)

1. मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त (Psycho-Analytical Theory)

व्यक्तित्व के इस सिद्धान्त के प्रतिपादक सिगमंड फ्रायड महोदय है। फ्रायड ने अपने मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त में दो महत्वपूर्ण प्रत्ययों को स्वीकार किया है जो निम्न है–

अचेतनता– चेतन, अर्द्धचेतन, अचेतन

इदं, अहं, पराअहं–

व्यक्तित्व का प्रकार सिद्धान्त–

आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने प्रकार सिद्धान्त को दो भागों में बाँटकर व्यक्तित्व की व्याख्या की है–

1. शारीरिक गुणों के आधार पर– व्यक्ति के इस प्रकार सिद्धान्त को शरीर गठन सिद्धान्त भी कहा जाता है। इस आधार पर जर्मन मनोचिकित्सक क्रेश्मर ने व्यक्तित्व के चार प्रकार बताए है–
   1. पिकनिक (गोलकाय) प्रकार
   2. एस्थेनिक (लम्बकाय) प्रकार
   3. सुडौलकाय प्रकार
   4. डाईप्लास्टिक प्रकार

शेल्डन का प्रकार सिद्धान्त–

शेल्डन ने 1940 में उसने सोमैटोटाईप सिद्धान्त प्रस्तुत किया तथा व्यक्तित्व के तीन प्रकार बताया है–

1. एण्डोमार्फी
2. मीसोमार्फी
3. एक्टोमार्फी

2. मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर–

मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर जुंग, आइजेक तथा गिलफोर्ड ने व्यक्तित्व के अलग–अलग प्रकार बताए हैं।

1. अन्तर्मुखी
2. बहिर्मुखी

आइजेंक ने 1947 में तंत्रिका रोगियों का विश्लेषण करके व्यक्तित्व के तीन प्रकार बताए है–

1. अन्तर्मुखता–बहिर्मुखता
2. स्नायुविकृत या स्थिरता
3. मनोविकृत

व्यक्तित्व का शीलगुण सिद्धान्त–

अलपोर्ट का शीलगुण सिद्धान्त–

जी.डब्लू. अलपोर्ट के अनुसार– व्यक्तित्व की संरचना भिन्न–भिन्न प्रकार के शीलगुणों से ठीक उसी प्रकार बनी है जैसे एक मकान की संरचना छोटी–छोटी ईटो से बनी होती है। शीलगुण का सामान्य अर्थ होता है– व्यक्ति के व्यवहारों का वर्णन। व्यक्ति के व्यवहारों में पूर्ण संगति को शीलगुण तथा कम संगति को आदत कहा जाता है।

अलपोर्ट ने शीलगुणों को दो भागों में विभाजित किया है–

1. सामान्य शीलगुण
2. व्यक्तिगत शीलगुण– इसको तइन भागों में बाँटा गया है–
   (क) प्रमुख प्रवृत्ति
   (ख) केन्द्रीय प्रवृत्ति
   (ग) गौण प्रवृत्ति

कैटल का शीलगुण सिद्धान्त–

कैटल के अनुसार किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व वह विशेषता है जिसके आधार पर किसी भी परिस्थिति में उसके व्यवहार को देखा जाता है। व्यक्तित्व विशेषक मानसिक संरचनाएँ है जिन्हें व्यक्ति की व्यवहार प्रक्रिया की निरन्तरता तथा नियमितता के द्वारा जाना जा सकता है।

कैटल ने शीलगुणों को दो प्रकार का बताया है–

1. सतही शीलगुण
2. स्त्रोत शीलगुण

व्यक्तित्व का माँग सिद्धान्त–

व्यक्तित्व की माँग सिद्धान्त का प्रतिपादन अब्राहम मैसलो ने किया है जो मानवतावादी मनोविज्ञान का आध्यात्मिक जनक था। इन्होंने मानवमूल्यों, व्यक्तित्ववर्द्धन तथा आत्मनिर्देशन पर विशेष बल देते हुए बताया कि व्यक्तित्व का विकास व्यक्ति के अन्दर उपस्थिति अभिप्रेरकों के द्वारा संगठित ढंग से होता है। उसने अभिप्रेरकों को 5 वर्गों में बाँटकर निम्न पदानुक्रम में प्रस्तुत किया –

1. दैहिक माँगें – 85% संतुष्टि
2. सुरक्षा माँगे– 78% संतुष्टि
3. सामाजिक माँगे– 50% संतुष्टि
4. स्व सम्मान की माँगे– 40% संतुष्टि
5. आत्मसिद्धि की माँग– 10% संतुष्टि

व्यक्तित्व का मापन

व्यक्तित्व मापन की विधियाँ–

- आत्मनिष्ठ विधि
- वस्तुनिष्ठ विधि
- प्रक्षेपी विधियाँ

आत्मनिष्ठ विधियाँ–

- अवलोकन विधि
- साक्षात्कार विधि
- जीवन इतिहस

वस्तुनिष्ठ विधियाँ–

- निर्धारण मापनी
- प्रश्नावली व परिसूची
- परिस्थिति परीक्षण

प्रक्षेपी विधियाँ–

- साहचर्य तकनीकी
- रचना तकनीकी
- पूर्ति तकनीकी
- क्रम तकनीकी
- अभिव्यक्ति तकनीकी

निर्धारण मापनी–

- चैक लिस्ट
- आंकिक निर्धारण मापनी
- ग्राफिक निर्धारण मापनी
- क्रमिक निर्धारण मापनी
- स्थिति निर्धारण मापनी
- बाह्य चयन निर्धारण मापनी

प्रक्षेपीय विधियाँ–

- रोशा मासि लक्ष्य परीक्षण (RIBT)
- प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण–मरे (T.A.T.)

निष्कर्ष–

अतः कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व एक मनोशारीरिक तन्त्र है अर्थात् इसमें न केवल शारीरिक गुण वरन् मनोवैज्ञानिक गुण भी निहित रहते हैं। व्यक्ति के विभिन्न शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक गुण मिलकर उसके कुल व्यक्तित्व की रचना करते हैं। इस प्रकार व्यक्तित्व के प्रत्यय में स्वास्थ्य, शारीरिक गठन, वेशभूषा, वाणी जैसे अनेक शारीरिक गुण तथा मैत्रीभाव, परोपकार, समाजसेवा, बुद्धि, स्वास्थ्य स्वभाव, चरित्र जैसे अनेकानेक मनोवैज्ञानिक गुण समाहित रहते हैं। केवल शारीरिक गुणों या

केवल मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर व्यक्तित्व के सम्बन्ध में कुछ कहना, व्यक्तित्व के अधूरे पक्ष को प्रस्तुत करना होगा।

वातावरण के साथ व्यक्ति का समायोजन स्थापित करने में उसका व्यक्तित्व महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। वास्तव में वातावरण के साथ समायोजन करने की प्रक्रिया के दौरान ही किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति होती है। प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के अनुरूप वातावरण के साथ एक अनूठे ढंग से समायोजन करता है। समायोजन का यह अनूठा ढंग ही उस व्यक्ति का परिचायक होता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहारों एवं विचारों को क्रियाशील बनाता है एवं निर्देशित करता है। इसी प्रकार शिक्षकों का व्यक्तित्व भी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करता है तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायता प्रदान करता है। चूँकि शिक्षकों की उपस्थिति कक्षा में आदर्श रूप में होती है तथा इनका व्यक्तित्व छात्रों के लिए प्रोत्साहन का कार्य करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.	गुप्ता एस0पी0	''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण (2001)
2.	हेनरी ई गैरिट एवं वुडवर्थ आर0एस0	शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी संस्करण–1993, कल्याण पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
3.	शर्मा आर0ए0	'अध्यापक शिक्षा' इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ (2001)
4.	शर्मा आर0ए0	''शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया'' आर0 लाल बुक डिपो संस्करण (2009)
5.	सारस्वत मालती एवं बाजपेयी एल0बी0	''भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक समस्यायें'', लखनऊ, आलोक प्रकाशन, लखनऊ।